❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

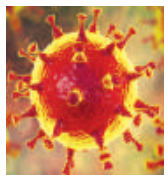

कोरोना संक्रमण
सतर्क रहें – सुरक्षित रहें
दो गज की दूरी बहुत जरूरी
स्वयं बचें – परिवार बचाएं– देश बचाएं

वर्ष 43, अंक 37 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 10 अगस्त, 2020 से रविवार 16 अगस्त, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं। वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

आर्यसमाज की ओर से देशवासियों को 74वें स्वाधीनता दिवस की बधाई

भारत का नाम आर्यवर्त्त था। इसे ही विश्व गुरु और सोने की चिड़िया के नाम से जाना जाता था। क्योंकि यहां पर धन-धान्य की कोई कमी नहीं थी और भारतीय संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों का विश्वभर में प्रसार होता था। यहां पर रहने वालों को उचित न्याय मिलता था और सभी लोग प्रेम-सौहार्द के वातावरण में उन्नति-प्रगति और सफलता के पथ पर अग्रसर रहते थे। लेकिन समय बदला, युग बदले और काल ने एक अलग तरह से करवट ली। हमारी भारत माता परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ी गई। इस देश पर पहले मुगलों का अधिपत्य रहा और फिर अंग्रेजों ने शासन किया। लंबे कल तक दासता की बेड़ियों में जकड़ी हुई भारत माता को आजाद कराने के लिए एक सूर्य का उदय हुआ, जिनको हम महर्षि दयानंद सरस्वती के नाम से जानते हैं। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने भारत माता की स्वतंत्रता के लिए देश में जगह-जगह जाकर क्रांतिकारी भाषण देकर एक नई जागृति की लहर उत्पन्न की।

महर्षि दयानंद सरस्वती एक ऐसे महामानव थे जिन्होंने स्वदेशी राजा के विषय में यह कहा था कि विदेशी राजा चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो लेकिन स्वदेशी राजा से अच्छा नहीं हो सकता। उन्होंने अपनी पुस्तक आर्याभिविनय में यह स्पष्ट लिखा है की अन्य देशवासी राजा हमारे देश में न हो, हम लोग पराधीन कभी न रहें। इससे पता लगता है कि ऋषि दयानंद सरस्वती की भावना और कामना क्या थी। राष्ट्र को संगठित करने के लिए जाति-पाति के झंझटों को मिटाकर एक धर्म, एक भाषा, एक समान वेशभूषा तथा खान-पान का प्रचार ऋषि दयानंद ने किया। ऋषिवर के भाषणों से, लेखों से और उनके अनगिनत प्रयासों से लाला लाजपत राय, सरदार भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, वीर सावरकर, आदि तमाम क्रांतिकारियों ने अपनी भारत माता को आजाद कराने के लिए अपने प्राणों का बलिदान किया। उस समय के प्रसिद्ध इतिहासकार सीताबी पट्टाभी रमैया ने देश की आजादी में आर्य समाज के योगदान का गौरव गान किया है।

आर्य समाज ने हमेशा राष्ट्र सेवा और मानव निर्माण में अहम भूमिका निभाई है,

74वें स्वाधीनता दिवस संरक्षक पद्मभूषण महाशय सुरेशचन्द्र आर्य जी, महामन्त्री श्री विनय आर्य श्री योगेश मुंजाल जी, आर्य प्रतिनिधि सभा के इत्यादि आर्यनेताओं ने टीवी चैनल के माध्यम से पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के धर्मपाल जी, सभा के प्रधान श्री दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, जी, टंकारा ट्रस्ट के प्रधान एवं उद्योगपति मन्त्री अजय सहगल जी, उत्तराखण्ड प्रधान डॉ. विनय विद्यालंकार जी समस्त देशवासियों को आर्यसन्देश शुभकामनाएं प्रदान कीं।

अंधेरों से प्रकाश की ओर बढ़ने का रास्ता आर्य समाज ने ही दिखाया है।

आज देश को आजाद हुए 74 वर्ष हो गए हैं, उस समय प्रश्न था देश को आजाद कराने का और आज सवाल है आजादी को सुरक्षित रखने का। इन 74 सालों में हम यह देख कर रहे हैं कि किस तरह हमारा देश अनेकानेक झंझावातों में उलझा हुआ है, जबकी हमने भौतिक उन्नति के नाम पर चंद्रयान तक लांच किया है लेकिन हमारे देश की युवा पीढ़ी किस तरह पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति के पीछे दीवानी होकर अपने ही देश से आजादी के नारे लगा रही है, देश की आर्थिक उन्नति में सहभागी बनने के बजाय समय-समय पर देश की बर्बादी के नारे लगा रही है, नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने कहा था कि हमारे देश को आजाद होने के बाद सख्त अनुशासन में रहने की जरूरत है। आज हमारे युवा अपने देश के अमर शहीदों को ही भूलते जा रहे हैं हालत यहां तक हो गई है कि अपने लक्ष्य और उद्देश्य को भूल कर लगातार पतन की ओर जा रहे हैं। अगर कोई किसी नौजवान से यह पूछे कि भारत की आजादी में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले 5 वीर अमर बलिदानियों के नाम बताओ तो शायद बहुत बड़ी संख्या ऐसे नौजवानों की होगी जो दो या तीन अमर शहीदों के नाम बताने में भी असमर्थ पाए जाएंगे, इसके पीछे सबसे बड़ा कारण है कि हम यह भूल जाते हैं कि आज जो हम आजाद भारत में स्वतंत्र श्वास ले रहे हैं। इसके पीछे उन्हीं का त्याग, तपस्या और समर्पण है जिन्होंने अपनी जान की परवाह न करते हुए भारत माता को आजाद कराया था।

आर्य समाज ने देश को आजाद कराने में भी सबसे बड़ा योगदान दिया था और देश की आजादी के बाद भी भारतीय वैदिक संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों के प्रचार-प्रसार में पूरी तरह से संलग्न था, है और रहेगा। चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो या चिकित्सा का क्षेत्र अथवा जब-जब देश में प्राकृतिक आपदा या किसी भी तरह की कोई समस्या आई हो, तो आर्य समाज हमेशा आगे बढ़कर सेवा के कार्य करता रहा है। आज हमारे देश के सामने कहीं बड़ी-बड़ी चुनौतियां हैं एक तरफ तो हमारे देश की सीमाओं पर पाकिस्तान, चीन और नेपाल जैसे देश अपनी छल कपट की नीति से आंखें गड़ाए बैठे हैं, वहीं दूसरी ओर कोरोना महामारी अपने शबाब पर है। लेकिन आर्य समाज ने कोरोना के समय भी मानव सेवा के लिए जो प्रयास किए, वे अत्यंत प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। पूरे भारत में और विदेशों में भी आर्य समाज ने कोरोना संकटकाल में एक अहम निर्णायक भूमिका का निर्वहन किया।

74वां स्वाधीनता दिवस पूरा देश उमंग उत्साह और उल्लास से मनाया गया। यह राष्ट्रीय पर्व हर वर्ष आता है और हमें जगाता है कि हम अपने देश के प्रति मन में प्रेम जगाएं और अपने अमर शहीदों से प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण के कार्यों में सहयोगी, उपयोगी और उद्योगी बनें, जो जहां पर है, जिस स्थिति में है उसको वहीं पर अपने देश के लिए सेवा भाव प्रकट करना चाहिए। अपने लिए और अपनों के लिए तो सभी जीते हैं लेकिन जीवन तो उन्हीं का सार्थक होता है जो छोटे सीमित दायरों को तोड़कर अपने समाज और देश के लिए समर्पित होकर सेवा करते रहें, यह राष्ट्रीय पर्व हम सबके लिए यही संदेश देता है कि –

भरा नहीं जो भावों से,
बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं वह पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

आइए इस 74वें स्वाधीनता दिवस पर हम संकल्प लें की वर्ष में कोई ना कोई ऐसा कार्य हम अवश्य करेंगे, जिससे मानव समाज और राष्ट्र लाभान्वित होगा। हम अपने कर्तव्य का पालन पूरी इमानदारी और निष्ठा से करेंगे, जिस क्षेत्र में हम कार्यरत हैं सेवा करेंगे, तभी यह राष्ट्रीय पर्व मनाना सार्थक होगा, वरना तो या रस्म अदायगी मात्र होकर रह जाएगी। इसलिए हम सोचें और विचारें–

हम क्या थे, क्या हो गए,
और क्या होंगे अभी।
आओ, मिलकर के विचारें,
ये समस्याएं सभी।।

स्वाधीनता दिवस केवल अवकाश का दिन नहीं है, अपितु आत्म चिंतन की बेला है, आत्माअवलोकन का अवसर है और आत्मनिरीक्षण करने का सही समय है। हम लोग ऋषि-मुनियों की संतान हैं, हम लोग वीरों की संतान हैं, ऐसे ऋषि-मुनियों की संतान जहां से पूरा विश्व ज्ञान संपदा प्राप्त करता था, जहां पाप और पापी थरथर कांपा करते थे, हम ऐसे वीर महान पुरुषों के बालक हैं जिनके सामने बड़े से बड़े क्रूर लोगों ने घुटने टेके हैं। लेकिन यह अलग बात है कि आज हम लोग भेड़ बकरियों की तरह अपने स्वरूप को भूलते जा रहे हैं और बिना सोचे-समझे किसी भी भीड़ का हिस्सा बन जाते हैं, जो कदापि उचित नहीं है। हमें सोचना चाहिए, विचारना चाहिए और अपने मन वचन और कर्म से किसी भी स्थिति में राष्ट्र का विरोध नहीं करना चाहिए, हमें अपनी आजादी का सम्मान करना चाहिए और आजादी को सुरक्षित रखने के लिए समर्पित होकर सेवा करनी चाहिए।

– ***सम्पादक***

वेद-स्वाध्याय

हम हिंसा और पाप के लिए प्रार्थना न करें

न त्यो रासीयाभिशस्तये वसो न पापत्वाय सन्त्य।
न में स्तोतामतीवा न दुर्हितः स्यादग्ने न पापया ।। -ऋक्० ८/१९/२६
ऋषिः **सोभरि काण्वः।।** देवता - **अग्निः।।** छन्दः **आर्चीस्वरादपतिः।।**

शब्दार्थ - **वसो** = हे जगत् के बसानेबाले! मैं **अभिशस्तये** = हिंसन के लिए **त्वा न रासीय** = तेरी स्तुति प्रार्थना कभी न करूं, कभी हविप्रदान न करूं और **सन्त्य** = हे संभजनीय! **पापत्वाय** = पाप के लिए भी मैं कभी तेरी प्रार्थना न करूं हवि प्रदान न करूं और **अग्ने** = हे अग्ने! **मे स्तोता** = मेरा प्रशंसक कभी **अमतीवा** = निबुद्धि, मूर्ख पुरुष **न स्यात्** = न होवे, **दुर्हितः** = दुष्कामना रखनेवाला पुरुष **न** = न होवे और **पापया** = पाप बुद्धि से [युक्त पुरुष भी]**न** = न होव।

विनय - हे जगत् को बसानेवाले! वसो! मैं कभी तुमसे दूसरों के विनाश के लिए प्रार्थना न करूं, और हे सन्त्य! संभजनीय! मैं कभी दूसरों के प्रति किसी अन्य पाप के लिए भी तुम्हारा संभजन न करूं। मैं तुम्हें कभी इसलिए हविः प्रदान न करूं कि उससे किसी दूसरे की हिंसा हो या कोई अन्य पाप होवे। हे बसानेवाले! तुमसे विनाश की प्रार्थना करना, हे सन्त्य! तुमसे पाप की चाहना करना, यह कितनी उलटी बात है! परन्तु हम अज्ञानी लोग मोहवश बहुत बार तुमसे ऐसी प्रार्थनाएं भी करते हैं। हम तो मारण-उच्चाटन-अभिचरण तक में तुमसे सफलता चाहा करते हैं, परन्तु शायद इसीलिए हम संसार में ठगे जाते हैं। हमें ऐसे स्तोता या प्रशंसक मिलते हैं जो अन्दर से हमारा अनिष्ट चाहते हैं, पर ऊपर से स्तुति करते हैं। हे अग्ने! मैं तो चाहता हूँ कि मेरी स्तुति कभी कोई मूर्ख पुरुष न करे, मेरे लिए दुर्भाव और अहित रखनेवाला कभी मेरा स्तोता व प्रशंसक न बने, पाप-बुद्धिवाला कभी मेरी खुशामद न करे। 'मैं कैसा हूँ' इसकी बड़ी अच्छी पहचान यह है कि मेरे प्रशंसक कैसे है, अतः मैं जहाँ यह चाहता हूँ कि नासमझ और दुर्हृदय पुरुषों की स्तुति मुझे कभी प्राप्त न हो, वहाँ मैं आपसे वह बल और ज्ञानप्रकाश भी पाना चाहता हूँ जिससे मैं तुमसे कभी हिंसा व पाप की प्रार्थना न कर सकूं। हे प्रभो! मैं तुमसे पवित्र ही प्रार्थना करूं और मुझे मनुष्यों की पवित्र हो स्तुति प्राप्त हो।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

आयोध्या में श्रीराम मन्दिर - स्मारक के शिलान्यास के बाद रामराज्य के मायने

...आर्य समाज की मान्यता, सिद्धांत और परम्पराएं तो हमेशा यही रही हैं कि हमें अपने महापुरुषों के गुण, कर्म, स्वभाव को अपनाना चाहिए। उनके जीवन चरित्र को अपना आदर्श बनाना चाहिए। केवल उनके चित्रों की पूजा करने से रामराज्य नहीं आएगा, बल्कि हमें उनके द्वारा किए गए कर्मों से प्रेरणा लेकर अपने मन-वचन और कर्म में मर्यादा को धारण करनी चाहिए। किस तरह उन्होंने अभिमानी रावण का संहार किया, किस तरह उन्होंने राजधर्म का पालन करते हुए माता सीता का त्याग किया, किस तरह उन्होंने अपने वचन का पालन करते हुए सुग्रीव और विभीषण को राजा बनाया, किस तरह उन्होंने जीवन के विपरीत क्षणों में धैर्य धारण करते हुए एक बड़ी मिसाल कायम की, किस तरह उन्होंने सज्जनों की रक्षा की, किस तरह उन्होंने असुरों का नाश किया, किस तरह उन्होंने राजा होते हुए त्यागी तपस्वी का जीवन व्यतीत किया, राष्ट्र हित को सर्वोपरि माना। ऐसी अनेक शिक्षाएं राम के जीवन से मिलती हैं। इसलिए आर्य समाज रामराज्य की मांग करने वालों का विरोधी नहीं है लेकिन यह अवश्य कहना चाहता है कि हे राम राज्य की मांग करने वालो अपने आचरण और व्यवहार को देखो, आत्मचिंतन करो, आत्ममंथन करो, आत्मावलोकन करो और जरा सोचो कि रामराज्य क्या था और फिर अपने भीतर झांको कि हम क्या हैं, हर व्यक्ति अगर प्रयास करें तो कुछ भी असंभव नहीं है। ....

5 अगस्त 2020 को अयोध्या में देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने श्री राम के स्मारक (मंदिर) का शिलान्यास किया। पूरे भारत सहित विश्व में श्री राम मंदिर के शिलान्यास का स्वागत किया गया और एक दूसरे को बधाई दी गई। उसके तुरंत बाद, या ऐसा भी कह सकते हैं कि जैसे ही सुप्रीम कोर्ट का फैसला राम मंदिर के हक में आया था, तब से ही सोशल मीडिया पर राम मंदिर के निर्माण के साथ-साथ रामराज्य स्थापना के लिए बातें की जा रही हैं। चारों तरफ एक ही बात का शोर है कि भारत में रामराज्य आएगा, रामराज्य आना चाहिए, रामराज्य के दिन आ गए हैं। यह अपने आप में अच्छी बात है, रामराज्य की कल्पना करना भी अच्छी बात है और रामराज्य आना भी चाहिए, इसमें भी कोई बुराई नहीं है बल्कि सम्पूर्ण देश और मानवता की भलाई है। किंतु यह रामराज्य की मांग करने वाले क्या यह जानते हैं कि रामराज्य किसे कहते हैं या रामराज्य किस चीज का नाम है?

सबसे पहले तो हम यह जाने कि रामराज्य कैसा था? इस प्रश्न का उत्तर यही होगा कि उस समय वैदिक कालीन युग था, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम स्वयं वेद धर्म के अनुयाई थे, राष्ट्र भक्त थे, मातृ-पितृ भक्त थे, एक आदर्श पुत्र, पति, भाई, राजा थे। उस समय चार वर्ण और चार आश्रम की संपूर्ण मान्यता थी, सब लोग वैदिक धर्म का पालन करते थे। आजकल के दिखावटी धर्म अनुयायियों की तरह नहीं थे, धर्म भीरु भी नहीं थे कि डर-डरकर जीवनयापन करें। पूजा और प्रार्थना में भी आजकल लोग इतने डरे रहते हैं कि किस देवता की पूजा करें या उस देवता की पूजा करें, तो कहीं वह देव नाराज न हो जाए, कहीं वह देव नाराज ना हो जाए। रामराज्य में सब लोग अग्निहोत्र करते थे। संध्या वंदन करते थे। परोपकार करते थे। गुरु और शिष्य, राजा और प्रजा, पति और पत्नी सभी लोग वैदिक धर्म का पालन करते थे। उस समय बुराई और बुरे लोगों से कोई डरता नहीं था बल्कि बुराई और बुरे लोगों को पहले समझया जाता था और फिर उन्हें उचित दंड भी मिलता था। इसलिए चारों तरफ शांति प्रेम, सौहार्द, और सद्भावना का वातावरण रहता था। सब लोग अपने-अपने कार्यों में संलग्न रहते थे और सभी के मन में संतुष्टि और चेहरे पर तेज दिखाई देता था। ऐसे रामराज्य की कल्पना करना कोई बुराई नहीं है। यह सभी की चाहत है कि सुख, शांति, प्रेम, सौहार्द, आरोग्यता पूरे देश में पूर्णरूपेण हो, लेकिन क्या केवल चाहने से रामराज्य की स्थापना हो जाएगी?

वस्तुतः राम कोई अवतार नहीं बल्कि एक विचार है। राम ऐसे महापुरुष हैं जिनके सद्भाव, सदाचरण और सद् व्यवहार से मानव मात्र को प्रेरणा लेनी चाहिए। राम अपने वचन के पक्के थे और उनके जीवन में एक और गुण विशेष रूप से जो देखने को मिलता है, राम ने कभी यह नहीं कहा कि मेरे कहने का यह भाव नहीं था, या मैं ऐसा नहीं कहना चाहता था। राम जो भी कहते थे, जो भी वचन देते थे, उसका पूरी तरह से पालन करते थे। आजकल के समय में आदमी का अपनी वाणी पर कोई संयम नहीं है। इंसान कहता कुछ है, करता कुछ है और बोलता कुछ है। मतलब कोई भी मर्यादा बोलने में नहीं रह गई है और जब कभी फंस जाता है, तब यही कहता है कि मेरे कहने का मतलब यह नहीं था। मैं यह नहीं कहना चाहता था, मेरी बात को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया गया है। इसके उदाहरण आप आजकल मीडिया के माध्यम से रोज देखते और सुनते हैं। अगर कोई रामराज्य की कल्पना करता है तो सबसे पहले उसको अपनी वाणी को संयमित तक करना पड़ेगा और वाणी का महत्व समझना पड़ेगा। फिर यह भी अनुमान लगाना चाहिए कि आज के समय में हम लोग कितना वाणी का सदुपयोग करते हैं। रामराज्य में द्वेष भावना नहीं थी। जबकि आजकल बचपन में ही द्वेष भावना का बीजारोपण हो जाता है, रामराज्य में ईर्ष्या, निंदा और चुगली के भाव नहीं थे। काम क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर को वश में रखा जाता था, उस समय पर हर रिश्ते की अपनी मर्यादा थी। हर चीज को धर्म से जोड़ करके देखा जाता था। जबकि आज हर तरह से मर्यादा तार-तार हो रही है। चारों तरफ स्वार्थ, छल-कपट की नीति सिर चढ़कर बोल रही है। गरिमापूर्ण रिश्ते-नाते बुरे हाल से गुजर रहे हैं लेकिन फिर भी रामराज्य की बात करना कोई बुरी बात नहीं है।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने यह सिद्ध किया कि राजा का धर्म क्या होता है? राजा के धर्म के लिए, उसकी परिपालना के लिए उन्होंने जो सर्वोच्च आदर्श मर्यादाओं का उदाहरण प्रस्तुत किया, पूरे संसार में कहीं पर भी देखने को नहीं मिलता। भाइयों के बीच में ऐसी उदारता का उदाहरण सारे संसार में कहीं नहीं मिलता कि एक दूसरे को कह रहे हैं कि आप राजा बनो-आप राजा बनो। कोई किसी तरह का स्वार्थ नहीं है। राम त्याग है, राम तपस्या है, राम मर्यादा है, राम साधना है, राम-राम हैं, ऐसे राम हैं जिन्होंने अपने माता-पिता, भाई, पत्नी सबको मर्यादा का पाठ पढ़ाया। जिस समय माता कौशल्या राम को वन जाने से रोक रही थी और कह रही थी कि पिता का यही आदेश है तो मैं भी तुम्हें एक आदेश देती हूं कि तुम वन को मत जाओ, जितना अधिकार पिता का है उतना ही मेरा है। श्री राम ने धर्म की शिक्षा देते हुए अपनी माता को समझाया की पिता की आज्ञा में ही माता की आज्ञा समाहित होती है। अगर पिता ने आदेश दिया है तो उसकी परिपालना ही सर्वोपरि है इसलिए आप मुझे वन जाने से न रोकें और जब पिता ने राम को कहा कि हे राम केकैई के बहकावे में आकर मैंने तुम्हें वन जाने का आदेश दिया है इसलिए तुम मुझे कारागार में डाल कर अयोध्या के राजा बन जाओ। तब राम जी ने अपने पिता से कहा कि हे पिताजी, आप हजारों वर्ष तक अयोध्या पर राज करें आपकी आज्ञा के अनुसार अब वन में ही जाना मेरे लिए आवश्यक है। इसलिए आप कोई ऐसी आज्ञा न करें जिससे धर्म आहत हो जाए। ऐसे

- शेष पृष्ठ 7 पर

नव बौद्ध का नया रोग

.....एक तरफ राम तथा कुश के अस्तित्व को ही नकार देते हैं और दूसरी तरफ रावण को महान बौद्ध संत तो राम को हत्यारा और अन्यायी भी कहने लगते हैं। अब जो सबसे बड़ी इनकी और इनके आकाओं की समस्या है वो ये है इन लोगों ने सिर्फ महात्मा बुद्ध का नाम सुना है कभी उनके वचन नहीं सुने, इस कारण इन्हें बुद्ध के उपासक कहना या बौद्ध मत के मानने वाले कहना एक किस्म से महात्मा बुद्ध जी का अपमान है। क्योंकि जातक कथाएं बौद्ध मत में अपना बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखती है, इनकी कुल संख्या करीब 547 है। ये कथाएं बुद्ध के समय में प्रचलित थी और इन्हें बुद्ध ने ही कहा है ऐसा बौद्ध ग्रंथो में कहा गया है। जातक कथाएं बुद्ध के युग में प्रचलित थीं, जिसमे बुद्ध पूर्व जन्मों के बोधिसत्वों के बारे में बताते हैं। इन जातक कथाओं में सिर्फ राम का ही नही बल्कि महाभारत के पात्रों का भी उल्लेख है। यानि इसे ऐसे समझिये कि महात्मा बुद्ध जी, राम जी, श्रीकृष्ण जी, होली-दीपावली जैसे उत्सवों को मानते थे। लेकिन नवबौद्ध मानते हैं कि महात्मा बुद्ध में दिमाग कम था और वामन मेश्राम जैसे लोगों में ज्यादा हैं।....

जब एक व्यक्ति ठीक से सोच नहीं पाता, उसका अपनी भावनाओं और व्यवहार पर काबू नहीं रहता, तो ऐसी हालत को मानसिक रोग कहते हैं। वैसे साइकोलॉजी के जन्मदाता डॉ सिंगमंड फ्रायड कहते हैं कि मानसिक रोग के लक्षण, हर व्यक्ति में अलग-अलग हो सकते हैं, ये इस बात पर निर्भर करते हैं कि उसके हालात कैसे हैं और उसे कौन-सी मानसिक बीमारी है। कभी कभी कुछ बीमारियों में इन्सान अपनी खुद की पहचान छोड़कर खुद को दूसरा मानने लगता है। आज भारत में एक नये रोगी खड़े हो रहे है जिन्हें नवबौद्ध कहा जा रहा है, जो खुद को ही महात्मा बुद्ध समझ रहे हैं।

इसका सबसे बड़ा उदहारण नवबौद्धों से ले लीजिये ये लोग खुद को भगवान गौतम बुद्ध के अनुयायी मानने लगे हैं। लेकिन नालंदा में बौद्ध युनिवर्सिटी जलाने वाले हजारों बौद्ध ग्रंथों को आग लगाने वाले बख्तियार खिलजी के विरुद्ध नहीं बोलते, बल्कि हिन्दू धर्म पर अनर्गल टिप्पणी करने हिन्दू देवी देवताओं का अपमान करने कोसने को इन लोगों ने बुद्धिजम और महात्मा बुद्ध का अंतिम उपदेश समझ लिया है। यानि बुद्ध के नाम पर नवबौद्ध आजकल हिन्दू समाज में नफरत और घृणा फैला रहे हैं।

होली दीपावली का विरोध करते हैं, मनुस्मृति का दहनदिवस मनाते हैं लेकिन कभी हजारों बौद्ध ग्रन्थ जलाने वाले बख्तियार खिलजी का एक पुतला नहीं जलाते ना कभी मजहबी किताब को जलाते देखा होगा। ये भारत का वो नया तबका है जिसको भारतीय धर्म और इतिहास की जरा भी जानकारी नहीं है, जिसमें 20 से 35 साल के युवा, अनपढ़ और खाली दिमाग के लोग ज्यादा हैं। इतिहास और धर्म की जानकारी से इन अनभिज्ञ लोगों को अंतरराष्ट्रीय संबंधों और षड़यंत्रों के सम्बन्ध में क्या जानकारी होगी आप बखूबी अंदाजा लगा सकते हैं! जब जाति और धर्म की राजनीति करने वाले वामन मेश्राम जैसे, मीना आमखेडे जैसे लोग बड़ी-बड़ी बातें करते हैं तो इन अनभिज्ञ लोगों को लगता है जैसे इनका उद्धार हो गया और ये लोग उन्हें महात्मा बुद्ध समझकर अपना तारणहार समझकर इनका महिमामंडन करने लगते हैं।

यानि इनका उद्देश्य है सनातन धर्म का विरोध जो जितना सनातन धर्म का विरोध करेगा वो उतना बड़ा नवबौद्ध कहलाया जायेगा। अगर आज महात्मा बुद्ध जीवित होते तो शायद इनकी हरकतें देखकर खुद को शर्मिंदा महसूस करते। क्योंकि भगवान बुद्ध के समय किसी भी प्रकार का कोई पंथ या संप्रदाय नहीं था न ही उन्होंने इस तरह के कोई निर्देश दिए थे कि बौद्ध मत चलाया जाये। किंतु, बुद्ध के निर्वाण के बाद बुद्ध के शिष्यों ने खुद को बौद्ध कहना शुरू किया धीरे धीरे इनकी संख्या बढ़ी और निर्वाण के बाद द्वितीय बौद्ध संगीति में भिक्षुओं में मतभेद हो गया यानि बौद्धमत दो फाड़ हो गया। पहले को महायान और दूसरे को हीनयान कहते हैं। हीनयान को ही थेरवाद भी कहते हैं। महायान के अंतर्गत बौद्ध धर्म की एक तीसरी शाखा थी वज्रयान अब नवबौद्ध खुद को नवयान कहते हैं।

लेकिन आज ये लोग यानि नवबौद्ध वर्तमान में समाज को दिग्भर्मित करने के लिए रोज तरह तरह के झूठ और प्रपंच फैलाते रहते हैं, इसी कड़ी में यह सनातन धर्म के सर्वमान्य महापुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम राम के सम्बन्ध में दुष्प्रचार फैलाते रहते है। यह लोग यह दावा करते फिरते है कि इतिहास में राम और कुश जैसा कोई पात्र पैदा नही हुआ है ये सिर्फ ब्राह्मणों की कल्पना है और मिथ्या है। इसके बाद ये लोग कहते हैं कि शम्बूक ऋषि शूद्र था इस कारण रामचन्द्र जी ने उनका वध कर दिया। मसलन एक काल्पनिक पात्र ने शम्बूक का वध कर दिया। पता नहीं इनके पास दिमाग है या खाली घडा। क्योंकि कैसे एक काल्पनिक पात्र किसी का वध कर सकता है।

इनके तर्क और दलीलें रोज-रोज एक नई कहानी बनती है, एक तरफ राम तथा कुश के अस्तित्व को ही नकार देते है और दूसरी तरफ रावण को महान बौद्ध संत तो राम को हत्यारा और अन्यायी भी कहने लगते हैं। अब जो सबसे बड़ी इनकी और इनके आकाओं की समस्या है वो ये है इन लोगों ने सिर्फ महात्मा बुद्ध का नाम सुना है कभी उनके वचन नहीं सुने, इस कारण इन्हें बुद्ध के उपासक कहना या बौद्ध मत के मानने वाले कहना एक किस्म से महात्मा बुद्ध जी का अपमान है। क्योंकि जातक कथाएं बौद्ध मत में अपना बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखती है, इनकी कुल संख्या करीब 547 है। ये कथाएं बुद्ध के समय में प्रचलित थी और इन्हें बुद्ध ने ही कहा है ऐसा बौद्ध ग्रंथो में कहा गया है। जातक कथाएं बुद्ध के युग में प्रचलित थीं, जिसमे बुद्ध पूर्व जन्मों के बोधिसत्वों के बारे में बताते हैं। इन जातक कथाओं में सिर्फ राम का ही नही बल्कि महाभारत के पात्रों का भी उल्लेख है। यानि इसे ऐसे समझिये कि महात्मा बुद्ध जी, राम जी, श्रीकृष्ण जी, होली-दीपावली जैसे उत्सवों को मानते थे। लेकिन नवबौद्ध मानते हैं कि महात्मा बुद्ध में दिमाग कम था और वामन मेश्राम जैसे लोगों में ज्यादा हैं।

जब जातक कथाओं में सनातन धर्म का इतना वर्णन है तो समस्या क्या है। जो ये लोग इस तरह के ओछेपन पर उतर आये हैं और अपनी आइडेंटिटी कराईसस का शिकार हो रहे हैं। दरअसल वर्षों से अम्बेडकर और दलित के नाम पर मायावती का केवल टिकट व्यापार चल रहा था। फिर मोदी के जनधन, उज्ज्वला, 12 रुपए का बीमा, डीबीटी के जरिए मनरेगा और कई सब्सिडियों का पैसा सीधे गरीबों के बैंक खाते में जाना जैसी योजनाएं वो बड़े कारण हैं। जिनसे उत्तर भारत में पासी, खटीक, वाल्मीकि, धोबी, बेलदार, कोली, मुसहर इत्यादि अनुसूचित जातियाँ मजबूती से भाजपा के साथ जुड़ी हैं। सिर्फ अम्बेडकरवादी नवबौद्ध जाटव राजनीति के जरिए मायावती इन जातियों को हथिया नहीं सकती। इस कारण इन्हें ये खुराक पिलाई जा रही है कि तुम लोग हिन्दू नहीं नवबौद्ध हो, और 'जय भीम जय मीम' का नारा इन्हें पकड़ा दिया गया ताकि मुसलमान राजनीति में मजबूत हो और ये लोग उनकी राजनीती का चारा बना दिए गये।

अब इन्हें नवबौद्ध कैसे बनाया जा रहा है यानि ये इतना जल्दी खुद को नवबौद्ध कैसे माने तो एक नियम के अनुसार इनसे 22 प्रतिज्ञा ली जाती है और हिन्दुओं को गलियां बकवाई जाती हैं ताकि ये खुद को नवबौद्ध मान लें। तीसरा इस नव उदित वर्ग के लोग खुद बाल्मीकि, चमार, भंगी, डूम, बाजगी, कोली, अहीर, तेली, तम्बोली, आदि एक नहीं हो सके, न एक दूसरे के तीज, त्योहार पर शामिल होते, आपस में रोटी-बेटी के रिश्ते में खाइयाँ है और बातें खोखले अथवा नए मनुवाद की करते हैं। मनुस्मृति को जलाते हैं कि कितना जातिवाद है जबकि इन्होंने न मनुस्मृति पढ़ी न बुद्ध का धम्मपद। फिर भी झूठ पे झूठ हर रोज नई कहानी नई बात। और समाज में राम और बुद्ध के नाम पर संघर्ष को हवा देने का काम नवबौद्ध समूह करता रहता है। जबकि उनके झूठ का पुलिंदा उनके ही बौद्ध ग्रंथों से खुल जाता है यानि यह झूठ के पुलिंदे पर बौद्ध दर्शन को धर्म के रूप में परिभाषित कर अलग दुकान चलना चाहते हैं। जो न पहले संभव हो सका था न आगे संभव होगा। एक दिन दलित चेतना जागेगी और इनके मुंह पर तमाचा मारेगी कि बात हमारे विकास की करो न कि नफरत फैलाकर खुद के विकास की। - ***राजीव चौधरी***

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्यूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में वैबिनार के माध्यम से

श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर "वैदिक दर्शनों का स्वरूप" व्यख्यानमाला सम्पन्न

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के निर्देशन में 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के तत्वावधान में आचार्य सत्यजित् आर्य जी (वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, साबरकांठा, गुजरात) के सान्निध्य में सोमवार, 27 जुलाई से रविवार 09 अगस्त 2020 तक 'वैदिक दर्शनों का स्वरूप' विषय पर व्यख्यानमाला सम्पन्न हुई।

आचार्य सत्यजित आर्य जी का परिचय श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सभी श्रोताओं को दिया।

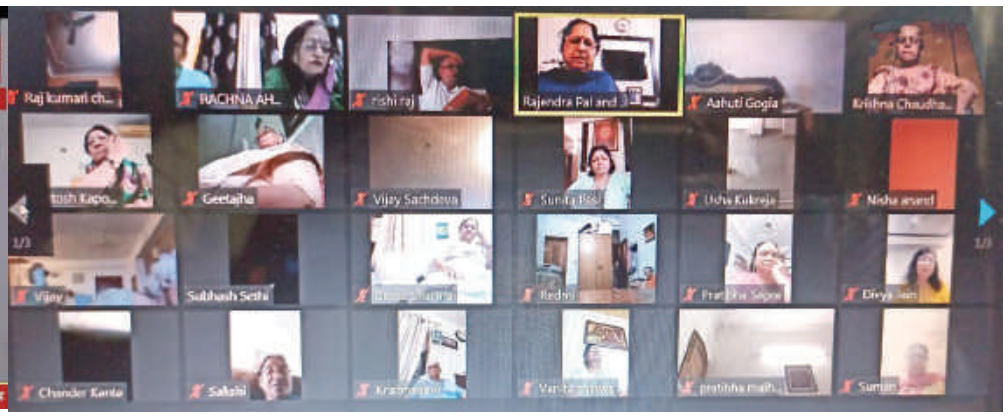

आचार्य जी ने बहुत ही सरल व सौम्य भाषा में दर्शनों की विवेचना करते हुए बताया कि हमारे ऋषि-महर्षियों ने विभिन्न विषयों पर बड़ी गहराई से चिंतन किया है और उसका विवरण अलग-अलग विषय अनुसार सरलता से समझाने के लिए विवेचन भी किया है। दर्शनों द्वारा दृष्टि या समझ पैदा होती है इससे जिज्ञासु का सामर्थ्य बढ़ता है। दर्शनों के अध्ययन से ज्ञान, बुद्धि और विवेक बढ़ाने के लिए जिज्ञासा उत्पन्न होती है।

धर्म-अध्यात्म-वेद को समझने-समझाने के लिए ही दर्शनों को प्रतिपादित किया गया है। देखना, जानना, समझना, ज्ञानरूपी समझ को भावना मुक्त करना विषय पर दर्शनशास्त्र केंद्रित हैं। दर्शन शास्त्र हमें मुक्ति की ओर प्रेरित करते हैं। यह पूर्व मीमांसा व उत्तर मीमांसा दर्शन, वेदांत दर्शन, वैशेषिक दर्शन, न्याय दर्शन, योग दर्शन और सांख्य दर्शन हैं। सभी दर्शनों शास्त्र में सूत्र शैली हैं।

आपने दर्शनों की व्याख्या करते हुए समझाया कि योग दर्शन, छः दर्शनों में से एक शास्त्र है और योगशास्त्र का एक ग्रंथ है। योगसूत्रों की रचना 3000 साल पहले महर्षि पतंजलि ने की थी। उन्होंने पहले से इस विषय में विद्यमान सामग्री का भी इसमें उपयोग है। योगदर्शन के चार पाद है और 195 सूत्र हैं। समाधिपाद में 51, साधनपाद में 55, विभूतिपाद में 55 और केवल्यपाद में 34।

1. समाधिपाद - इसमें समाहित चित्त वाले सबसे उत्तम अधिकारियों के लिए योग का वर्णन किया गया है। समाधिपाद में निम्न तीन सूत्रों की विस्तृत व्याख्या है। १) योग से चित्त की वृत्तियों का रोकना है। **चित्तवृत्तिनिरोधः** - योगसूत्र में चित्त को एकाग्र करके ईश्वर में लीन करने का विधान है।

महर्षि पतंजलि के अनुसार चित्त की वृत्तियों को चंचल होने से रोकना ही योग हैं अर्थात मन को इधर-उधर भटकने न देना, केवल एक ही वस्तु में स्थिर रखना ही योग है।अष्टांग योग को समझाने का प्रयास किया है।

२) वृत्तियों का निरोध होने पर द्रष्टा के स्वरूप में स्थिति होती है।

३) स्वरूप अवस्थिति से अतिरिक्त अवस्था में द्रष्टा वृत्ति के समान रूप वाला प्रतीत होता है।

योग के अन्तर्गत मन को दो प्रकार से रोकना होता है, एक तो केवल एक विषय में लगातार इस प्रकार लगाए रखना कि दूसरा विचार न आने पावे, इसको एकाग्रता अथवा सम्प्रज्ञात समाधि कहते हैं इसके चार भेद है।

१) वितर्क - किसी स्थूल विषय में चित्तवृत्ति की एकाग्रता।

२) विचार- किसी सूक्ष्म विषय में चित्तवृत्ति की एकाग्रता।

३) आनन्द- अहंकार विषय में चित्तवृत्ति की एकाग्रता।

४) अस्मिता- अहंकार रहित अस्मिता विषय में चित्तवृत्ति की एकाग्रता।

2. साधनपाद : इसमें विक्षिप्त चित्तवाले मध्यम अधिकारियों के लिए योग का साधन बतलाया गया है। सर्वबन्धनों और दुःखों के मूल कारण पांच क्लेश हैं - अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश। क्लेशों से कर्म की वासनाएँ उत्पन्न होती हैं। कर्म वासनाओं से उत्पन्न होता है जिसमें जाति, आयु और भोग रूपी तीन प्रकार के फल लगते हैं। इन तीन फलों से सुख-दुःख रुपी दो प्रकार का स्वाद होता है। जो पुण्य कर्म, हिंसा रहित दूसरे के कल्याणार्थ, किये जाते हैं उनसे जाति, आयु और भोग में सुख मिलता है। जो पाप कर्म, हिंसात्मक दूसरों को दुःख पहुंचाने की लिए, किये जाते हैं उनसे जाति, आयु और भोग में दुःख पहुँचता है। सुख के पीछे दुःख का होना आवश्यक है। दुःख के नितांत अभाव का उपाय निर्मल विवेक ख्याति है। जिसकी सबसे ऊँची अवस्था प्रज्ञा होती है। निर्मल विवेक ख्याति की उत्पत्ति का साधन अष्टांग योग है अर्थात योग के आठ अंगों के अनुष्ठान से अशुद्धि के क्षय होने पर ज्ञान की दीप्ति विवेक ख्याति पर्यन्त बढ़ जाती है।

योग के आठ अंग - यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि हैं। साधनपाद में योग के पाँच बहिरंग साधन यम, नियम, आसान, प्राणायाम, प्रत्याहार बतलाये गए हैं।

3. विभूतिपाद : धारणा, ध्यान और समाधि- तीनों मिलकर संयम कहाते हैं। इस संयम के विनियोग से नाना प्रकार की सिद्धियां प्राप्त हो सकती हैं। ये सिद्धियां श्रद्धालुओं की योग में श्रद्धा बढ़ाने में और विक्षिप्त (असमाहित) चित्त वालों के चित्त को एकाग्र करने में सहायक होती है, किन्तु इनमें आसक्ति नहीं होनी चाहिए। योगमार्ग पर चलने वाले के लिए नाना प्रकार के प्रलोभन आते हैं। अभ्यासी को उनसे सावधान रहना चाहिए , उसमे फँसने से और घमंड से बचे रहना चाहिए। स्थान वालों के आदर भाव करने पर लगाव और अभिमान नहीं करना चाहिए। चित्त और पुरुष के भेद जानने वाला सारे भावों के अधिष्ठातृत्त्व और सर्वज्ञातृत्त्व को प्राप्त होता है। किन्तु योगी को उनमे भी अनासक्त रह कर अपने असली ध्येय की ओर बढ़ना चाहिए।

4. कैवल्यपादः इसमें चित्त और चित्त के सम्बन्ध में जो शंकाएँ हो सकती हैं, उनका युक्ति पूर्वक निवारण किया है। चित्त की नौ अवस्थाएँ -

१) जाग्रत अवस्था - सत्त्व गुण गौणरूप से दबा रहता है। तम , सत्त्व को वृत्ति के यथार्त रूप के दिखलाने से रोकता है। रज प्रधान होकर चित्त को इन्द्रियों द्वारा बाह्य विषयों में ऊपर करने में समर्थ होता है।

२) स्वप्नावस्था - सत्त्व गुण, गौणतर रूप से दबा रहता है। तम , रज को इतना दबा लेता है कि वह चित्त को इन्द्रियों द्वारा बाह्य विषयों में ऊपर नहीं कर सकता है। किन्तु रज की क्रिया सूक्ष्म रूप से होती रहती है, जिससे वह चित्त को मन द्वारा स्मृति के संस्कारों में ऊपर करने में समर्थ रहता है।

३) सुषुप्ति अवस्था - सत्त्व गुण , गौणतम रूप से दब जाता है। तमोगुण , रजोगुण की स्वप्नावस्था वाली क्रियाओं को भी रोक कर प्रधान रूप से चित्त पर फैल जाता है। इसलिए किसी विषय का किसी प्रकार भी ज्ञान नहीं रहता परन्तु किसी विषय के ज्ञान न होने की प्रतीति होती रहती है, अर्थात रज का नितांत आभाव नहीं होता, वह कुछ अंश में बना ही रहता है।

आचार्य जी ने प्रलयावस्था, समाधि की प्रारम्भ अवस्था, सम्प्रज्ञात समाधि (एकाग्रता), विवेकख्याति, असम्प्रज्ञात समाधि आदि के विषय में विस्तार से बताया।

सांख्य दर्शन

सांख्य दर्शन के विषय में आचार्य जी ने बताया कि 'सांख्य' का शाब्दिक अर्थ है - 'संख्या सम्बंधी' या विश्लेषण। इसकी सबसे प्रमुख धारणा सृष्टि के प्रकृति-पुरुष से बनी होने की है, यहाँ प्रकृति, पंचमहाभूतों से बनी जड़ है और पुरुष, जीवात्मा चेतन है। जड़ प्रकृति सत्व, रजस एवं तमस् - इन तीनों गुणों की साम्यावस्था का नाम है। ये गुण **'बल च गुणवृत्तम्'** न्याय के अनुसार प्रतिक्षण परिगामी हैं। इस प्रकार सांख्य के अनुसार सारा विश्व त्रिगुणात्मक प्रकृति का वास्तविक परिणाम है। मूलतः सांख्य परिणामिनी प्रकृति के परिणामस्वरूप तेईस अवांतर तत्व भी मानता है। तत्व का अर्थ है 'सत्य ज्ञान'। इसके अनुसार प्रकृति से बुद्धि, उससे अहंकार, तमस, अहंकार से पंच-तन्मात्र (शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गंध) एवं सात्विक अहंकार से ग्यारह इंद्रिय (पंच ज्ञानेंद्रिय, पंच कर्मेंद्रिय तथा उभयात्मक मन) और अंत में पंच तन्मात्राओं से क्रमशः आकाश, वायु, तेजस्, जल तथा पृथ्वी नामक पंच महाभूत, इस प्रकार तेईस तत्व क्रमशः उत्पन्न होते हैं। अध्यात्मिक, आदिभौतिक तथा आत्मिक दुःखों से छूटने के लिए विवेक प्राप्त करना पड़ेगा। आत्मा अपरिवर्तनशील है, न काल से, न देश से, न शरीर से, न हमारे कर्म से बंधन के कारण है। अविवेक मुल कारण है बंधन का। विवेक व विद्या से कर्म करने से मुक्ति की ओर बढ़ सकते हैं। ईश्वर व आत्मा अजर-अमर हैं, शरीर अर्थात प्रकृति की चर्चा है। विवेक युक्त कर्म करने चाहिए। वैराग्य विवेक से विरक्त होकर मुक्ति की ओर बढ़ते हैं, कर्माश्य के कारण राग-द्वेष के कारण से जन्म मरण के बंधन में रहते हैं। 18 तत्वों का स्थूल शरीर यहीं रह जाता है, सूक्ष्म शरीर अपने संस्कारों सहित प्रस्थान करता है।

वैशेषिक दर्शन

इस दर्शन में पदार्थों के सभी प्रकार का वर्णन है। आत्मदर्शन के विचारों का सबसे पहले महर्षि कणाद ने सूत्र रूप में लिखा। आत्मदर्शन के लिए विश्व की

- शेष पृष्ठ 5 पर

पृष्ठ 4 का शेष

सभी छोटी-बड़ी, तात्विक तथा तुच्छ वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त करना सामान रूप से आवश्यक है। इन तत्वों के ज्ञान के लिए प्रमाणों की अपेक्षा होती है। न्यायशास्त्र में प्रमाण पर विशेष विचार किया गया है, किंतु वैशेषिक दर्शन में मुख्य रूप से 'प्रमेय' के विचार पर बल दिया गया है।

श्रावणी उपाकर्म

आचार्य जी ने श्रावणी उपाकर्म का महत्व बताते हुए कहा - श्रावणी स्वाध्याय के प्रचार का पर्व है। सद्ज्ञान, बुद्धि, विवेक और धर्म की वृद्धि के लिए इसे निर्मित किया गया। श्रावणी वैदिक पर्व है। प्राचीन काल में ऋषि-मुनि इसी दिन से वेद पारायण आरंभ करते थे। इसे 'उपाकर्म' कहा जाता है। सद्ज्ञान ईश्वर की अपार करुणा के फलस्वरूप वह सुलभ - सरल हो सका। सद्ज्ञान का वरण जितना आवश्यक है और जिनसे यह प्राप्त हुआ था, उनके परिश्रम, त्याग, तप व करुणा से सुगम हो सका, उनके द्रष्टा ऋषि-मनीषियों को भी उतना ही श्रद्धास्पद मानना चाहिए एवं उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए।

आचार्य समावर्तन संस्कार के समय स्नातक को जो उपदेश वा आदेश देता है कि- स्वाध्याय से प्रमाद न करना, अच्छा अध्ययन अर्थात् वेदादि शास्त्रों का अध्ययन करना तथा आत्मा तथा शरीर आदि के तत्त्वज्ञान के लिये प्रयत्न करना। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। सद्कर्म के संकल्प का नवीनीकरण एवं तर्पण आदि कर्म किए जाते हैं। श्रावणी में आहार-विहार का ध्यान रखने, हिंसा न करने, इंद्रियों का संयम करने एवं सदाचरण करने की प्रतिज्ञा ली जाती है।

न्याय दर्शन - न्यायदर्शन में जाँच-पड़ताल के उपायों का वर्णन किया गया है। सत्य की खोज के लिए, अर्थात वास्तविकता का पता निम्न सोलह तत्वों द्वारा ही किया जा सकता है - १) प्रमाण, २) प्रमेय, ३) संशय, ४) प्रयोजन, ५) दृष्टान्त, ६) सिद्धान्त, ७)अवयव, ८) तर्क, ९) निर्णय, १०) वाद, ११) जल्प, १२) वितण्डा, १३) हेत्वाभास, १४) छल, १५) जाति और १६)निग्रहस्थान। मुख्यरूप से इस दर्शन में 4 प्रमाणों का वर्णन मिलता है ।

प्रत्यक्षानुमानशब्दोपमानानि प्रमाणानि

(न्याय० १/१/३)

1. प्रत्यक्ष प्रमाण 2. अनुमान प्रमाण 3. उपमान प्रमाण तथा 4. शब्द प्रमाण। इसीलिए इस शास्त्र को तर्क करने की व्याकरण कह सकते हैं। वेदार्थ जानने में तर्क का विशेष महत्व है, अत: यह वेदार्थ करने में सहायक है।

वेदांत दर्शन

वेदान्त दर्शन के अनुसार संसार में जो कुछ भी दृश्यमान है और जहाँ तक हमारी बुद्धि अनुमान कर सकती है, उन सबका का मूल स्रोत्र एकमात्र 'परब्रह्म' ही है। वेदान्त दर्शन ब्रह्म के स्वरूप को विवेचित करता है तथा जीव एवं प्रकृति के संबंध में भी विचार प्रकट करता है। यह दर्शन चार अध्यायों एवं सोलह पादों में विभक्त है, जो निम्न है-

1- प्रथम अध्याय में वेदान्त से संबंधित समस्त वाक्यों का मुख्य आशय प्रकट करके उन समस्त विचारों को समन्वित किया गया है, जो बाहर से देखने पर परस्पर भिन्न एवं अनेक स्थलों पर तो विरोधी भी प्रतीत होते हैं।

2- द्वितीय अध्याय का विषय 'अविरोध' है। इसके अन्तर्गत श्रुतियों की जो परस्पर विरोधी सम्मतियाँ हैं, उनका मूल आशय प्रकट करके उनके द्वारा अद्वैत सिद्धान्त की सिद्धि की गयी है।

3- तृतीय अध्याय की विषय वस्तु साधना है। इसके अन्तर्गत प्रथमत: स्वर्गादि प्राप्ति के साधनों के दोष दिखाकर ज्ञान एवं विद्या के वास्तविक स्रोत परमात्मा की उपासना प्रतिपादित की गयी है, जिसके द्वारा जीव ब्रह्म की प्राप्ति कर सकता है।

4- चतुर्थ अध्याय साधना का परिणाम होने से फलाध्याय है। इसके अन्तर्गत वायु, विद्युत एवं वरुण लोक से उच्च लोक-ब्रह्मलोक तक पहुंचने का वर्णन है, साथ ही जीव की मुक्ति, जीवन्मुक्त की मृत्यु एवं परलोक में उसकी गति आदि भी वर्णित है। अन्त में यह भी वर्णित है कि ब्रह्म की प्राप्ति होने से आत्मा की स्थिति किस प्रकार की होती है, जिससे वह पुन: संसार में आगमन नहीं करती। मुक्ति और निर्वाण की अवस्था यही है। इस प्रकार वेदान्त दर्शन में ईश्वर, प्रकृति, जीव, मरणोत्तर दशाएँ, पुनर्जन्म, ज्ञान, कर्म, उपासना, बन्धन एवं मोक्ष इन दस विषयों का प्रमुख रूप से विवेचन किया गया है।

मीमांसा दर्शन, भारतीय दर्शन के सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थों में से एक है। इसके रचयिता महर्षि वेद व्यास के शिष्य, महर्षि जैमिनि हैं।

मीमांसा: - मीमांसा: शब्द का अर्थ (महर्षि पाणिनि के अनुसार) जिज्ञासा, अर्थात् जानने की लालसा। मनुष्य जब इस संसार में अवतरित हुआ उसकी प्रथम जिज्ञासा यही रही थी कि वह क्या करे? महर्षि जैमिनि कहते हैं - **'अथातो धर्मजिज्ञासा'** - धर्म, करने योग्य कर्म के जानने की लालसा है।

मीमांसा का तत्व सिद्धान्त विलक्षण है। इसकी गणना अनीश्वरवादी दर्शनों में है। आत्मा, ब्रह्म, जगत् आदि का विवेचन इसमें नहीं है। यह केवल वेद व उसके शब्द की नित्यता का ही प्रतिपादन करता है। इसके अनुसार मन्त्र ही सब कुछ हैं। वे ही देवता हैं, देवताओं की अलग कोई सत्ता नहीं। मीमांसकों का तर्क यह है कि सब कर्मफल के उद्देश्य से होते हैं। फल की प्राप्ति कर्म द्वारा ही होती हैं अत: वे कहते हैं कि कर्म और उसके प्रतिपादक वचनों के अतिरिक्त ऊपर से और किसी देवता या ईश्वर को मानने की क्या आवश्यकता है। मीमांसकों और न्यायिकों में बड़ा भारी भेद यह है कि मीमांसक शब्द को नित्य मानते हैं और न्यायिक अनित्य। सांख्य और मीमांसा दोनों अनीश्वरवादी हैं, पर वेद की प्रामाणिकता दोनों मानते हैं। वेद पुस्तक नहीं है मंत्रों का संग्रह है। परमात्मा का ज्ञान नित्य है अत: वेद ज्ञान नित्य है।

आचार्य सत्यजित् जी ने दर्शनों के गूढ़ज्ञान और रहस्यों को बड़े ही सरल, सहज शैली में प्रस्तुत करके लगातार 14 दिनों तक आर्यजनों तथा सुधि श्रोताओं की दर्शन शास्त्रों के बारे में जो जिज्ञासा थी उस पर प्रकाश डाला और दर्शन पढ़ने को लालायित किया। उन्होंने सब को निमंत्रण भी दिया है कि आप दर्शनों की कार्यशाला में भाग लें, उन को अच्छी तरह समझें और अपने जीवन को मुख्य लक्ष्य की ओर अग्रसर करें।

समापन कार्यक्रम में श्री धर्मपाल आर्य जी, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने आचार्य सत्यजित् जी का धन्यवाद करते हुए कहा कि बहुत ही सौम्य व सरल भाषा में आचार्य जी ने अपने ज्ञानपुंज से सभी श्रोताओं को समझाने का प्रयास किया। हम स्वाध्याय करें, स्वाध्याय का एकमात्र मतलब है वेदों या आर्ष ग्रंथों का हम अध्ययन व मनन करें, अपनी जीवन शैली को वेदानुसार बनाना चाहिए। उन्होंने भी श्रोताओं से अनुरोध किया कि जैसा आचार्य सत्यजित् जी ने आप को विभिन्न कार्यशालाओं से जुड़ने का और अध्ययन करने का निमंत्रण दिया है। आप इन कार्यशालाओं से जुड़कर स्वाध्याय करें, गहन अध्ययन करें, धर्म लाभ प्राप्त करें और अपने जीवन को ओर ऊंचाइयों तक ले चलें। आदरणीय प्रधान जी ने एक दृष्टांत भी सुनाया कि बहुत वर्ष पहले हमारी आर्य समाज नया बांस में आचार्य शिवकुमार शास्त्री जी आए थे, उन्होंने बताया था कि जैसे कोई भी निर्माता कोई वस्तु बनाता है तो एक बुकलेट साथ में देता है जिससे जान सके कि उसका कैसे उपयोग किया जा सकता है। ऐसे ही सृष्टि नियंता परमपिता परमात्मा ने भी वेद रूप में हमें ज्ञान दिया है कि हम अपना जीवन किस प्रकार व्यतीत करें। सृष्टिकर्ता अनादि है और उसका ज्ञान भी अनादि है जो कि वेद रूप में हमारे पास है। बहुत सुंदर दार्शनिक चर्चाएं चल रही थी और आचार्य जी ने बड़ी सरलता से श्रोताओं की भ्रातियों को भी दूर किया। प्रधान जी ने सभी श्रोताओं और सभी सहयोगी कार्यकर्ताओं का इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु धन्यवाद दिया।

पदमभूषण महाशय धर्मपाल जी ने आज का व्याख्यान सुना। इस कार्यशाला से जुड़े श्रोताओं को धन्यवाद दिया और कहा कि आप महर्षि दयानंद के कार्य को आगे बढ़ाते रहें, मैं भी इसी कार्य हेतु पंचकूला जा रहा हूं। आप सब की शुभकामनाओं से ही मैं आर्य समाज के काम कर पा रहा हूं और आपको आशीर्वाद देता हूं कि आर्य समाज के कार्यों को इसी तरह बढ़ाते रहिए।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में वर्चुअल टेक्निकल टीम में श्री नीरज आर्य, श्री बिपिन भल्ला, श्रीमती अन्नू वासुदेवा, आर्य संदेश के सहयोगी गण, सभा के सहयोगी सदस्य तथा प्रतिदिन इस कार्यशाला के संयोजक श्रीमती हर्ष आर्य, आचार्य अमृता आर्य, श्रीमती अंजना मैदान,श्रीमती प्रतिष्ठा वर्मा, श्रीमती शालिनी आर्य, श्रीमती संध्या आर्य, श्रीमती विनीता खन्ना, श्री नरेंद्र अरोड़ा, श्री वेद प्रकाश, श्री पीयूष शर्मा, श्री अजय कालरा, श्री देव मित्र आर्य, श्री किशोर आर्य, श्री मोक्ष मेहतानी तथा श्री विनोद कालरा का दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य केंद्रीय सेवा दिल्ली राज्य की ओर से मैं हृदय की गहराइयों से धन्यवाद करता हूं।

- सतीश आर्य, संयोजक

सदा उत्साहित रहने के उपाय

(Methods of Enthusiasm)

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

जीवन में सुख-दु:ख, विघ्न, बाधायें आती ही रहती हैं। जिन्हें देख कर कुछ लोग अच्छे कार्य को प्रारम्भ ही नहीं करते परन्तु जो शूरवीर हैं वे जिस कार्य को प्रारम्भ कर देते हैं उसे पूरा करके ही दम लेते हैं। वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या जिसमें बिखेर हुये शूल नहीं नाविक की धैर्य परीक्षा क्या जब धारा ही प्रतिकूल न हों। प्रसन्नता पूर्वक कार्य करने वालों की कठिनाईयाँ अपने आप सुलझती जाती हैं।

किसी कार्य को करने का जोश, उमंग, हौंसला उत्साह कहलाता है। लक्ष्मी ऐसे पुरुष का ही वरण करती है।

उत्साह सम्पन्न दीर्घ सूत्रं क्रिया
निधिज्ञं व्यसनेवसक्तम्।
शूरं कृतज्ञं दृढ. सौ हृदय लक्ष्मी
स्वयंयाति निवास हेतो:।।

जो सदा उत्साहित रहता है, कार्य को लटकाता नहीं है, कार्य करने की विधि को जानता है, जिसमें किसी प्रकार का दुर्व्यसन नहीं है, शूरवीर किये हुये उपकार को मानने और जिसकी मित्रता दृढ़ है ऐसे पुरुष के यहाँ लक्ष्मी स्वयं निवास करने के लिये आती है। उत्साहित रहने के लिये निम्न सूत्र उपयोगी हैं-

परिस्थितियों को हँसते हुये स्वीकार करें

जीवन में सुख-दु:ख, विघ्न, बाधायें आती ही रहती हैं। जिन्हें देख कर कुछ लोग अच्छे कार्य को प्रारम्भ ही नहीं करते परन्तु जो शूरवीर हैं वे जिस कार्य को प्रारम्भ कर देते हैं उसे पूरा करके ही दम लेते हैं।

वह पथ क्या, पथिक कुशलता क्या,
जिसमें बिखेर हुये शूल न हों।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
जब धारा ही प्रतिकूल न हों।

प्रसन्नता पूर्वक कार्य करने वालों की कठिनाईयाँ अपने आप सुलझती जाती हैं। अंग्रेजी में कहावत है-

Well begin is hal done.

आशावादी दृष्टिकोण रखना
नर हो, न निराश करो मन को,
काम करो-कुछ काम करो।।

धैर्य न टूटे पड़े चोट सौ धन की।
यही अवस्था होनी चाहिये निजमन की।
कांच का गिलास आधा पानी से भरा हुआ है। निराशावादी उसे आधा खाली और आशावादी आधा भरा हुआ बतलायेगा। एक परिवार में एक युवक, उसकी बहिन और माता तीन व्यक्ति थे। युवक निराशावादी था। उसने कहा माँ हम तीन ही हैं। माँ ने कहा अरे पगले ! तेरी शादी होने पर बहू घर में आयेगी तो चार हो जायेंगे चिन्ता क्यों करता है। युवक ने कुछ विचार कर कहा फिर मेरी बहिन की शादी हो जायेगी और हम तीन ही रह जायेंगे। माँ ने आश्वासन देते हुये कहा-तेरे पुत्र भी तो होगा निराशावादी पुत्र ने कहा- माँ फिर तुम्हारे जाने का समय हो जायेगा। ऐसे निराशावादी युवक कौन समझा सकता है।

प्रतिष्ठित व्यक्तियों से प्रेरणा लें

समाज में कुछ व्यक्ति ऐसे भी मिलेंगे जिन्होंने अपने पुरुषार्थ से प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त किया है। जिस व्यक्ति के कार्य से आप प्रभावित हैं उसी को अपना आदर्श मान कार्य में जुट जायें। महापुरुषों का जीवन चरित्र पढ़ें। लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती। कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

अधिक महत्त्वकांक्षी न बनें

यद्यपि बड़ा लक्ष्य बनाना कोई बुरा नहीं है। परन्तु याद रखें-शेख चिल्ली के समान सपने देखना उपहास का पात्र बनना है। कोई बड़ा कार्य करना है तो उसे टुकड़ों में बांटकर करें। जब कार्य का एक भाग पूरा हो जाये तो फिर दूसरा, तीसरा करने से बड़ा कार्य भी आसान हो जायेगा। किसी भी कार्य की योजना बनाते समय अपनी क्षमता, संशोधन और सहायकों का मूल्यांकन कर लेने से सफलता की अधिक सम्भावना रहती है।

वर्तमान में जीयें

भूतकाल से शिक्षा लेकर वर्तमान में कार्य करते हुये भविष्य बनायें। जो व्यतीत हो चुका वह समय अब आना नहीं है। इसलिये उसके लिये शोक करना या चिन्तित होना व्यर्थ है। अभी जो आगे आने वाला है उस समय परिस्थितियाँ जैसी रहेंगी वैसा विचार कर लिया जायेगा। आपके सामने वर्तमान है वही आपका है। उसे ही सुखद, सुन्दर, सुव्यव स्थित बनाने का प्रयत्न करें। प्रतिदिन प्रात: यह चिन्तन करें कि आज का दिन बहुत ही अच्छी प्रकार से व्यतीत होगा।

- *क्रमश:*

Makers of the Arya Samaj : Swami Shraddhanand Ji

Continue From Last issue

.....Swami Shraddhanand left Mayapur after the ceremony. He then travelled all over India. In the course of a year or so he delivered as many as three hundred lectures. In all these he emphasized the need for Brahmcharya or celibacy. He taught that people should build up their character. 'Nations,' he said, "become great only on account of the character of the persons that compose them." He also thought of writing the history of the Arya Samaj. For this he collected material wherever he went.....

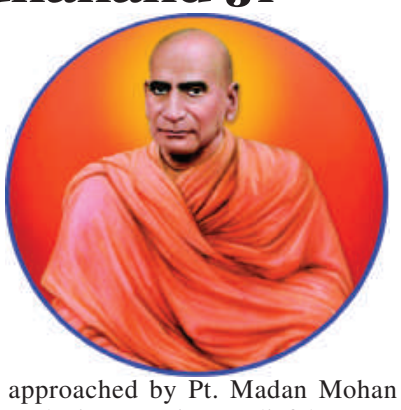

To accomplish this he gave up his own money. Then he collected money from others. He wanted to spend this money in building an Agricultural College which should be attached to the Gurukula. He was anxious for the students to learn farming. He also wanted them to receive some kind of industrial training. Above all, he desired that they should have an Ayurvedic college oftheir own. He was able to have some of these things done, but others remained mere dreams.

By this time the Gurukula had become a great institution. Its fame had spread far and wide. People came from all parts of the world to see it. They were all full of admiration for it. Its site touched their hearts, while its scheme of studies filled them with delight. They all congratulated Mahatma Munshi Ram on his work.

But Mahatma Munshi Ram himself was not quite satisfied with what he had done. It is true that Gurukula had become popular, but this was not the aim of his life.

According to the Shastras every Hindu has to pass through four stages oflife. First of all he is to be a student. Then he has to live as a householder. After this he has to cut himself away from his family. Last of all, he has to become a Sanyasi, when he has to give up everything. Mahatma Munshi Ram had passed through the first three stages. He now wanted to be a Sanyasi. He wanted to give up everything. It was his desire to devote himself entirely to the contemplation of God and the service of others.

But his friends did not want him to do this. They thought that he should continue to devote himself to the Gurukula and theArya Samaj. But Mahatma Munshi Ram, after much consideration, made up his mind to become a Sanyasi or a recluse. So he retired to the garden house at Mayapur to think about this question. The more he thought about it the firmer became his resolve. At last he publicly announced that he would leave the Gurukula.

The day arrived when he was to bid farewell to the Gurukula. On that day everybody in the Gurukula gave him a send-off. They all accompanied him in procession as far as Mayapur.

Mahatma Munshi Ram walked at the head of this procession. He had a big staffin his hand and a yellow scarf on his shoulders. He was followed by the principal and the professors of the Gurukula. After this came the old graduates ofthe Gurukula. These were followed by the students. When the procession reached the place where the families of the professors lived a little child rushed out. He cried, "Grandpa, grandpa," and clung to the knees ofthe Mahatma. The child was no other than his own grandson. This touched every heart, but Mahatma Munshi Ram remained unmoved.

At Mayapur the ceremony was performed. Mahatma Munshi Ram had his head shaved. He cast off his former clothes and put on the garments of a Sanyasi. Then his name was changed. He now came to be known as Swami Shraddhanand. He vowed that he would not hanker after any worldly thing. He also resolved to devote himself entirely to the service of mankind.

Swami Shraddhanand left Mayapur after the ceremony. He then travelled all over India. In the course of a year or so he delivered as many as three hundred lectures. In all these he emphasized the need for Brahmcharya or celibacy. He taught that people should build up their character. 'Nations,' he said, "become great only on account of the character of the persons that compose them." He also thought of writing the history of the Arya Samaj. For this he collected material wherever he went.

But this work had to be suspended for two reasons. In the first place, Swami Shraddhanand learned that the Arya Samajists of Dhaulpur State were in trouble. The State authorities had ordered a part of the Arya Samaj mandir to be demolished. On this site public conveniences were to be constructed. The Arya Samajists resented this and represented their case to the State. But nobody listened to them. At last Swami Shraddhanand was sent for. He went and saw the Prime Minister. But this had no effect. Then Swami Shraddhanand said, "I will starve myself to death unless you change your mind." The authorities then agreed to the demands oftheArya Samajists.

Some other time famine broke out in Gharwal. Swami Shraddhanand was approached by Pt. Madan Mohan Malaviya to arginase relief there.

So he went and toured the famine-stricken area. He found that the people were really in great distress. So he opened depots for the distribution of grain. At some of these the grain was distributed free. At others it was sold at a very cheap rate.

After leaving Gharwal, Swamiji stayed for sometime in the Gurukula, where he wrote a report of the famine relief. Then he left for Delhi. While he was there the RowlattAct was passed. This shocked the Indians very much and they agitated against it. The leader ofthis agitation was Mahatma Gandhi. Mahatma Gandhi wanted to go to Delhi to confer with some other leaders. But he was prevented from doing so. This created a great deal of unrest amongst the people. This showed itself especially at Delhi. Crowds of people came out of their homes and made for the railway station. To prevent them from doing so the Government called out the Mil itary and the Police. A large number of machine guns were also placed in different parts ofthe city. In spite of all these things the people could not be kept under control.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

आर्य समाज द्वारा मनाया गया श्री कृष्ण जन्मोत्सव

हमारी वैदिक संस्कृति मैं महापुरुषों के जन्मदिन मनाने की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी योगीराज श्री कृष्णचंद्रजी महाराज का 5248वां जन्मोत्सव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली की आर्य समाजों द्वारा हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज प्रीत विहार एवं आर्य समाज सफदरजंग एनक्लेव में विशेष रुप से आयोजन किए गए। जिनमें आर्य संदेश टीवी यूट्यूब चैनल द्वारा लाइव टेलीकास्ट भी दिखाया गया। इन कार्यक्रमों में योगीराज श्री कृष्ण के यथार्थ आदर्श जीवन की प्रेरणा मानव समाज को प्रदान की गई और बताया गया योगीराज श्री कृष्ण का संपूर्ण जीवन मानव समाज को सुदिशा प्रदान करने वाला था, वर्तमान में जो कपोल कल्पित कल्पना है समाज में प्रचलित है जिनमें श्री कृष्ण के आदर्श जीवन को कलंकित करने का काम किया जा रहा है उसकी तरफ ध्यान न देते हुए एक ऐसे महापुरुष जिन्होंने हर हाल हर स्थिति में वैदिक मूल्यों की स्थापना के लिए, वैदिक धर्म की स्थापना के लिए उस समय के वीर महान योद्धाओं को एक धर्म युद्ध में विजय दिलाई जो उस समय अत्यंत आवश्यक थी। योगीराज श्री कृष्ण एक बालक, विद्यार्थी, शिक्षक, मित्र, उपदेशक, योद्धा, याज्ञिक, सिद्ध साधक, उपासक, और महान योगी आदि सभी रूपों में अद्वितीय और अनुपम थे। उनके जीवन से प्रेरणा लेना यह मानव मात्र का परम कर्तव्य है।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी के इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक, आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान और एमडीएच के चेयरमैन पदमभूषण महाशय धर्मपाल जी ने अपने संदेश में कहा - योगीराज श्री कृष्ण का संपूर्ण जीवन मानव मात्र के लिए एक आदर्श प्रेरणाओं का आधार है। उनके जन्मदिवस पर मैं सभी को मंगलमय शुभकामनाएं देता हूं, सभी लोग योगेश्वर श्रीकृष्ण का संदेश अपने जीवन में धारण करें, सब सुखी हों, निरोग हों और कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ें। सभी को श्री कृष्ण जन्माष्टमी की बहुत-बहुत मंगलमय शुभकामनाएं।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने संपूर्ण मानव जाति को अपने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आर्य संदेश के समस्त दर्शकों को मैं अभिवादन करते हुए श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व की शुभकामनाएं देता हूं, योगीराज श्री कृष्ण चंद्र जी महाराज का जन्मोत्सव हमारे लिए प्रेरणा प्राप्त करने का एक स्वर्णिम अवसर है। उनके जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने अपने जीवन में कितनी बुलंदियों और ऊंचाइयों को प्राप्त किया यह अपने आप में एक अद्भुत आदर्श है, हमारे लिए ऐसे महापुरुष है जिनसे हमें मानव जीवन के हर क्षेत्र में प्रेरणा मिलती है ऐसे महापुरुष के जन्मोत्सव पूरा देश और दुनिया मना रही है, मैं दिल्ली सभा की ओर से और सभी संगठनों की ओर से आप सबको पुनः हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने सभी महानुभावों को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर शुभकामनाएं देते हुए अपने संदेश में कहा की महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अनुसार मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और योगीराज श्री कृष्ण वैदिक संस्कृति के आधार पुरुष हैं। क्योंकि उन्होंने जिस समय हमारी वैदिक संस्कृति विनाश की ओर जा रही थी उसे रोकने के लिए अपने अप्रतिम सामर्थ्य का उपयोग किया । वह हमारे आधार पुरुष हैं क्योंकि जब वैदिक संस्कृति क्षीण हो रही थी और किसी भी व्यक्ति को वैदिक संस्कृति के मूल्यों के विपरीत चलने का अभिमान हो गया था उन्होंने उसके उस अभिमान को तोड़ने का कार्य अपने समय में किया और उन्हें याद दिलाया की वैदिक संस्कृति और उसके मूल्य ऐसे हैं जो इनको अपना कर चलेगा उससे ही यहां जीने का अधिकार है और इसी तरह की परिस्थिति योगिराज श्रीकृष्ण के साथ भी घटी, जब उन्होंने देखा कि ये तो अपने-अपने राजकाज में इतने मग्न होकर वैदिक मूल्यों के विपरीत जीवन संचालन करने का काम कर रहे हैं तब उनको लगा कि मुझे ऐसे पक्ष का साथ देना चाहिए जो वैदिक धर्म के मूल्यों की पुनः स्थापना कर सके इसके लिए उन्होंने पांडवों का साथ दिया और कौरवों का युद्ध में विनाश करके एक वैदिक साम्राज्य की स्थापना की। इसलिए आज हमारी जिम्मेदारी क्या है आज हम पुनः उसी जिम्मेदारी से बंधे हुए हैं, अगर हम श्री कृष्ण के उस यथावत स्वरूप को जिसके करोड़ों लोग भक्त हैं पूरी दुनिया में यदि हम उसे बरकरार रखना चाहते हैं तो हमें वैदिक संस्कृति के उन मूल्यों की यथावत रक्षा करनी होगी। लेकिन दुर्भाग्य है उनके आदर्श जीवन के साथ में उनके प्रेरक कार्यों के साथ में जितनी कपोल कल्पित कहानियां जोड़ दी गई महर्षि दयानंद सरस्वती जी भी इस बात से बहुत दुखी थे, ऋषिवर का कहना था कि कहां योगीराज श्री कृष्ण का आदर्श जीवन और उनके साथ में यह जोड़ी गई कलंकित बातें? योगीराज श्री कृष्ण का ऐसा अद्भुत आदर्श जीवन जिनके जीवन के हिस्से से हर कोई व्यक्ति कुछ ना कुछ प्रेरणा लेकर अपना कल्याण कर सकता है। लेकिन हमने ऐसे योगीराज श्री कृष्ण के जीवन के साथ पता नहीं क्या-क्या अनर्गल बातें 'श्याम चूड़ी बेचने आया' ऐसे बहुत सारे कल्पनाएं जोड़कर वैदिक संस्कृति के आदर्श पुरुष को कलंकित करने का कार्य किया है, आज हमें इस अवसर पर यह विचार करना चाहिए और योगीराज श्रीकृष्ण के सत्य स्वरूप से प्रेरणा लेनी चाहिए।

महाशय धर्मपाल अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र नोल्टा, पंचकुला (हरियाणा)

आर्यसमाज के बहु प्रतीक्षित अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक शोध प्रशिक्षण केन्द्र, पंचकुला के लिए निम्नलिखित अनुभवी कार्यकर्ताओं की जरूरत है-

1. **रसोइया** - कम से कम ३ से ५ वर्ष का अनुभव
2. **संगीतकार** - जो आर्य समाज से जुड़े हों या इसमें अनुभव हो
3. **वैदिक पुरोहित** - आर्ष पाठ विधि से शिक्षा प्राप्त एवं समस्त संस्कारों को कराने में पूर्णतः निपुण महानुभाव।
4. **योग प्रशिक्षिक** - कम से कम ५ से ८ वर्ष का अनुभव

योग्यता अनुसार वेतन एवं आवास सहित अन्य सुविधाएं दी जाएंगी। आर्यसमाज एवं वैदिक परम्पराओं से ओत-प्रोत अभ्यर्थियों को प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक उम्मीदवार dapshrmanager@gmail.com पर अपना बायोडाटा भेजें।

- एच.आर.

शोक समाचार

श्रीमती प्रभा रखेजा जी का निधन

आर्यसमाज मयूर विहार फेज-1, दिल्ली की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती प्रभा रखेजा जी का 13 अगस्त, 2020 को निधन हो गया।

उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

डॉ. जयेन्द्र आचार्य को मातृशोक

आर्यसमाज नोएडा के धर्माचार्य डॉ. जयेन्द्र आचार्य जी की पूज्यमाता जी का दिनांक 10 अगस्त, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

पृष्ठ 2 का शेष

श्रीराम मन्दिर पूजन में ...

थे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम जी के विचार। ऐसी थी उनकी धर्म की मर्यादा। ऐसे थी उनकी उदार भावना। किंतु आजकल के समय में अपने माता-पिता, भाई-बंधु, रिश्ते-नातों में व्यक्ति कितनी मर्यादा लेकर के चलता है, यह विचारनीय है। रामराज्य की कल्पना करना या रामराज्य की मांग करना बुरा नहीं लेकिन केवल चाहने से कार्य नहीं होता। इसके लिए प्रत्येक भारतीय को स्वयं के लिए मानक स्थापित करने होंगे। सबको राम जी से प्रेरणा लेनी होगी और अपने जीवन में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के गुण, कर्म और स्वभाव को अपनाना होगा।

आर्य समाज की मान्यता सिद्धांत और परम्पराएं तो हमेशा यही कहती हैं कि हमें अपने महापुरुषों के गुण, कर्म, स्वभाव को अपनाना चाहिए। उनके जीवन चरित्र को अपना आदर्श बनाना चाहिए। केवल उनके चित्रों की पूजा करने से रामराज्य नहीं आएगा बल्कि हमें उनके द्वारा किए गए कर्मों से प्रेरणा लेकर अपने मन-वचन और कर्म में मर्यादा का धारण करनी चाहिए। किस तरह उन्होंने अभिमानी रावण का संहार किया, किस तरह उन्होंने राजधर्म का पालन करते हुए माता सीता का त्याग किया, किस तरह उन्होंने अपने वचन का पालन करते हुए सुग्रीव और विभीषण को राजा बनाया, किस तरह उन्होंने जीवन के विपरीत क्षणों में धैर्य धारण करते हुए एक बड़ी मिसाल कायम की, किस तरह उन्होंने सज्जनों की रक्षा की, किस तरह उन्होंने असुरों का नाश किया, किस तरह उन्होंने राजा होते त्यागी तपस्वी का जीवन व्यतीत किया, हित को सर्वोपरि माना। ऐसी अनेक शिक्षाएं राम जी के जीवन से मिलती है। इसलिए आर्य समाज रामराज्य की मांग करने वालों का विरोधी नहीं है लेकिन यह अवश्य कहना चाहता है कि हे रामराज्य की मांग करने वालों अपने आचरण और व्यवहार को देखो, आत्मचिंतन करो, आत्ममंथन करो, आत्मावलोकन करो और जरा सोचो कि रामराज्य क्या था और फिर अपने भीतर झांको कि हम क्या है, हर व्यक्ति अगर प्रयास करें तो कुछ भी असंभव नहीं है। रामराज्य आना भी असंभव नहीं है। इसलिए रामराज्य आए राम का जीवन हर व्यक्ति के जीवन का आधार बने, यह अपने आप में बड़ी बात होगी। जहां एक तरफ भव्य राम मंदिर बनेगा वहीं रामराज्य जी भी आए। इन्हीं कामनाओं के साथ सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं। - ***सम्पादक***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 10 अगस्त, 2020 से रविवार 16 अगस्त, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 13-14 अगस्त, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 12 अगस्त, 2020

शहीदी दिवस (11 अगस्त) पर विशेष

19 साल की उम्र में देश के लिए शहीद हुए थे खुदीराम बोस

देश की आजादी की लड़ाई में कुछ नौजवानों की शहादत ने स्वतंत्रता संग्राम का रुख बदलकर रख दिया था। एक ऐसा ही नाम खुदीराम बोस का भी है, जिन्हें 11 अगस्त 1908 को महज 19 साल की उम्र में फांसी दे दी गई थी। अग्रजी सरकार उस वक्त खुदीराम की निडरता और वीरता से इतना डरी हुई थी कि उन्हें इतनी कम उम्र में ही फांसी के फंदे पर चढ़ा दिया। अपनी वीरता के लिए पहचाने जाने वाले खुदीराम हाथ में गीता लेकर खुशी-खुशी फांसी के फंदे पर चढ़ गए थे।

देश को आजादी दिलाने के लिए कुछ भी कर गुजरने की तम्नना रखने वाले खुदीराम बोस का जन्म 3 दिसंबर 1889 को पश्चिम बंगाल के मिदनापुर में हुआ था। वह 9वीं कक्षा में ही स्वतंत्रता आंदोलन में कूद गए थे। 1905 में बंगाल विभाजन के विरोध में हुए आंदोलन में भी उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। खुदीराम की निडरता और आजादी के लिए उनके जज्बे को देखते हुए 28 फरवरी 1906 को सिर्फ 17 साल की उम्र में उन्हें पहली बार गिरफ्तार किया गया था, लेकिन वह अग्रेजों को चकमा देकर जेल से भाग निकले थे। हालांकि, सिर्फ दो महीने के बाद उन्हें दोबारा पकड़ लिया गया था। इसके दो महीनें बाद वह फिर से पकड़ लिए गए थे।

कई देशभक्तों को कड़ी सजा देने वाले किंग्सफोर्ड को सबक सिखाने के लिए खुदीराम ने अपने साथी प्रफुल्लचंद चाकी के साथ मिलकर 30 अप्रैल 1908 को सेशन जज की गाड़ी पर बम फेंक दिया, लेकिन गाड़ी में सेशन जज की जगह उसकी परिचित दो यूरोपीय महिलाएं कैनेडी और उसकी बेटी सवार थीं। इस हमले में किंग्सफोर्ड की दोनों महिलाएं मारी गईं, जिसका खुदीराम और प्रफुल्ल चंद चाकी को काफी अफसोस हुआ था।

इस हमले के बाद खुदीराम अंग्रेजों के निशाने पर आ गए और अंग्रेज पुलिस पूरी तरह से उनके पीछे लग गई। एक बार अंग्रजों ने वैनी स्टेशन पर खुदीराम और प्रफुल्ल चंद को घेर लिया। अपने को पुलिस से घिरा देख प्रफुल्ल ने खुद को गोली मार ली जबकि खुदीराम पकड़े गए। इसके बाद मुजफ्फरपुर जेल में महज 19 साल की उम्र में 11 अगस्त 1908 को उन्हें फांसी पर लटका दिया गया।

देश के लिए शहीद होने के बाद खुदीराम इतने लोकप्रिय हो गए कि बंगाल के जुलाहो ने उन्हें सम्मान देने के लिए एक खास किस्म की धोती बुनने का फैसला किया, जिसपर खुदीराम लिखा होता था। हालांकि, खुदीराम की मौत पर विद्यार्थियों ने काफी शोक जताया था। उनकी शहादत के कारण उस वक्त कई दिनों तक स्कूल बंद रहे थे। गौरतलब है कि अमर शहीद खुदीराम बोस के बलिदान दिवस पर हर साल 11 अगस्त को उनके फांसी स्थल पर एक बड़े समारोह का आयोजन होता है। लेकिन इस साल कोरोना वायरस के कारण उनके बलिदान दिवस पर किसी समारोह का आयोजन नहीं होगा। आर्य समाज की और इस अमर क्रांतिकारी बलिदान दिवस पर शत शत नमन।

प्रतिष्ठा में,

यज्ञ कुण्ड सैट प्राप्त करें

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली 2018 में 10,000 याज्ञिकों द्वारा एकरूप यज्ञ के विहंगम दृश्य आपने अवश्य देखा होगा। महासम्मेलन में प्रयुक्त किए गए यज्ञ कुण्ड सैट आपके परिवार, संस्था, समाज में प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा दैनिक यज्ञ प्रेमियों के लिए उपलब्ध।

मूल्य
मात्र 900/- रुपये

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -
दिल्ली आर्य प्र. सभा, मो. 9540040339

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज विकास नगर
उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

प्रधान : श्री सत्यदेव आर्य
मंत्री : श्री राम अवतार आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री रघुबीर सिंह आर्य

आर्य समाज मोलडबन्द विस्तार
बदरपुर, नई दिल्ली-110044

प्रधान : श्री गजेन्द्र सिंह चौहान
मंत्री : श्री कृष्ण कुमार भारद्वाज
कोषाध्यक्ष : श्री रणजीत सिंह रावत

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह